Vagisha International Multidisciplinary Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal)
Volume-01, Issue-05, October-2026| ISSN: 3139-2776 (online)
Available online at:https://vimrj.com/
DOI: https://doi.org/10.67185/vimrj.v1i5.44

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक कारकों की भूमिका

अंकज कुमार[1], डॉ. हरिओम शर्मा[2]

[1] शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, बी.एन.के.बी.पी.जी.कॉलेज, अकबरपुर, अम्बेडकरनगर, उ.प्र.

[2]शोध निर्देशक, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, बी.एन.के.बी.पी.जी.कॉलेज, अकबरपुर, अम्बेडकरनगर, उ.प्र.

e-mail: ankajs492@gmail.com

Received: 07 Sepetember 2026 | **Accepted:** 14 Sepetember 2026 | **Published:** 25 October 2026

सारांश

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना तथा उनमें ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति और व्यवहार संबंधी अपेक्षित क्षमताओं का विकास करना है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति का एक महत्त्वपूर्ण संकेतक है, जिसका संबंध उनकी अधिगम क्षमता, अध्ययन व्यवहार तथा शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति से होता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि केवल विद्यालयी वातावरण, शिक्षण विधियों एवं पारिवारिक परिस्थितियों से ही प्रभावित नहीं होती, बल्कि इसमें व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक कारकों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। बुद्धि, रुचि, अभिप्रेरणा, अध्ययन की आदतें, आत्मविश्वास, आत्म अवधारणा, आत्म प्रभावकारिता, ध्यान, स्मृति, संवेगात्मक स्थिरता तथा मानसिक स्वास्थ्य जैसे कारक विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार और शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं। निष्कर्ष के अनुसार विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार करने तथा उनकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण–अधिगम वातावरण विकसित करने से शैक्षिक प्रगति को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द : शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तिगत कारक, मनोवैज्ञानिक कारक, बुद्धि, अभिप्रेरणा

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास की एक सतत एवं गतिशील प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति ज्ञान अर्जित करता है, अपनी अंतर्निहित क्षमताओं का विकास करता है तथा सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं व्यावसायिक जीवन के लिए आवश्यक दक्षताओं को प्राप्त करता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम संबंधी ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उनमें तार्किक चिंतन,

सृजनात्मकता, समस्या–समाधान क्षमता, आत्मनिर्भरता तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना भी है। शिक्षा के इन उद्देश्यों की प्राप्ति का आकलन करने में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का विशेष महत्त्व है। शैक्षिक उपलब्धि के माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि विद्यार्थी ने निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों, पाठ्यवस्तु तथा अधिगम संबंधी अपेक्षाओं को किस सीमा तक प्राप्त किया है। इसका मूल्यांकन सामान्यतः परीक्षाओं में प्राप्त अंकों, उपलब्धि परीक्षणों, कक्षा–कार्य, परियोजना–कार्य तथा अन्य शैक्षिक गतिविधियों के आधार पर किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति का एक महत्त्वपूर्ण संकेतक होने के साथ–साथ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता को समझने का आधार भी है। तथापि, विद्यार्थियों की उपलब्धि केवल विद्यालय में प्रदान किए जाने वाले शिक्षण अथवा पाठ्यक्रम की प्रकृति पर निर्भर नहीं करती, बल्कि अनेक व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक एवं सामाजिक कारकों से भी प्रभावित होती है। समान विद्यालय में, समान शिक्षक के निर्देशन में तथा समान पाठ्यक्रम का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में भी पर्याप्त भिन्नता देखी जा सकती है। इस भिन्नता के पीछे विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताओं, रुचियों, अभिप्रेरणाओं, अध्ययन संबंधी आदतों, संवेगात्मक स्थितियों तथा अपनी क्षमताओं के प्रति धारणाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को समग्र रूप से समझने के लिए व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक कारकों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

व्यक्तिगत कारकों से आशय उन विशेषताओं एवं क्षमताओं से है, जो प्रत्येक विद्यार्थी को दूसरे विद्यार्थियों से अलग बनाती हैं तथा उसकी अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। इन कारकों में बुद्धि, आयु, शारीरिक स्वास्थ्य, पूर्व ज्ञान, स्मरण शक्ति, अध्ययन की आदतें, समय–प्रबंधन, परिश्रम तथा व्यक्तिगत योग्यताएँ प्रमुख हैं। विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता उन्हें विषय–वस्तु को समझने, तार्किक चिंतन करने तथा समस्याओं का समाधान खोजने में सहायता प्रदान करती है। इसी प्रकार, पूर्व ज्ञान नवीन ज्ञान के अधिग्रहण का आधार तैयार करता है, जबकि नियमित अध्ययन, अभ्यास एवं पुनरावृत्ति अर्जित ज्ञान को व्यवस्थित करने और उसका प्रभावी उपयोग करने में सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त, पर्याप्त नींद, उचित पोषण तथा अच्छा शारीरिक स्वास्थ्य विद्यार्थियों की एकाग्रता, सक्रियता और विद्यालयीय सहभागिता के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित करते हैं। तथापि, किसी विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को केवल उसकी व्यक्तिगत क्षमताओं के आधार पर निर्धारित नहीं किया जा सकता, क्योंकि अधिगम के अवसर एवं शैक्षिक वातावरण भी उसके प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं।

व्यक्तिगत कारकों के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक कारक भी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मनोवैज्ञानिक कारकों में अभिप्रेरणा, रुचि, आत्मविश्वास, आत्म

अवधारणा, आत्म प्रभावकारिता, अभिवृत्ति, ध्यान, स्मृति, संवेगात्मक स्थिरता, परीक्षा संबंधी चिंता तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रमुखता से सम्मिलित किया जा सकता है। अभिप्रेरणा विद्यार्थियों को शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास करने तथा कठिनाइयों के बावजूद अध्ययन जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसी प्रकार, किसी विषय के प्रति सकारात्मक रुचि विद्यार्थियों की सहभागिता और सीखने की तत्परता को बढ़ा सकती है। आत्मविश्वास एवं आत्म प्रभावकारिता विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने, चुनौतियों का सामना करने तथा असफलताओं से सीखने में सहायता प्रदान करते हैं। इसके विपरीत, अत्यधिक परीक्षा चिंता, तनाव, निराशा अथवा स्वयं की क्षमताओं के प्रति नकारात्मक धारणा विद्यार्थियों के ध्यान, स्मरण तथा शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से शैक्षिक उपलब्धि को समझने में अभिप्रेरणा तथा आत्म–प्रभावकारिता विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। बंडूरा (Bandura, 1997) के अनुसार, व्यक्ति की अपनी क्षमताओं के प्रति धारणा उसके प्रयास, व्यवहार तथा कठिन परिस्थितियों में निरंतरता को प्रभावित करती है। शैक्षिक संदर्भ में यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखने वाले विद्यार्थी कठिन शैक्षिक कार्यों में अधिक सक्रियता से भाग लेने तथा असफलता के बाद पुनः प्रयास करने के लिए तत्पर हो सकते हैं। इसी प्रकार, डेसि एवं रायन (Deci – Ryan, 1985) के आत्म–निर्धारण सिद्धांत में स्वायत्तता, योग्यता की अनुभूति तथा संबंधितता जैसी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के महत्त्व को रेखांकित किया गया है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनुकूल शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता एवं आंतरिक अभिप्रेरणा को प्रोत्साहित कर सकता है। इस प्रकार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए उनकी क्षमताओं के साथ–साथ उनकी अभिप्रेरणा, विश्वासों एवं संवेगात्मक स्थितियों का विश्लेषण भी आवश्यक है।

व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक कारक एक–दूसरे से पृथक न होकर परस्पर संबंधित होते हैं। उदाहरणार्थ, किसी विषय में पूर्व ज्ञान और अभ्यास की पर्याप्तता विद्यार्थी में आत्मविश्वास उत्पन्न कर सकती है, जबकि आत्मविश्वास उसकी अभिप्रेरणा एवं अध्ययन में सहभागिता को बढ़ावा दे सकता है। इसी प्रकार, नियमित अध्ययन की आदतें समय–प्रबंधन को प्रभावी बना सकती हैं तथा प्रभावी समय–प्रबंधन परीक्षा संबंधी तनाव को कम करने में सहायक हो सकता है। इसके विपरीत, लगातार असफलता, अध्ययन में अरुचि तथा नकारात्मक आत्म–अवधारणा विद्यार्थी के प्रयासों को प्रभावित कर सकती है। इसलिए शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करते समय इन कारकों के पारस्परिक संबंधों तथा विद्यालयीय एवं पारिवारिक परिस्थितियों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

सम्बन्धित सहित्य का अध्ययन

परवीन एवं चौहान (2026) ने माध्यमिक स्तर पर उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन किया। इस शोध में 206 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। निष्कर्षों में उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया। साथ ही, छात्राओं में उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर छात्रों की तुलना में अधिक पाया गया। चेब्रोलू (2024) ने उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक प्रदर्शन के संबंध का अध्ययन 80 माध्यमिक विद्यार्थियों पर किया। निष्कर्षों में दोनों के बीच कमजोर तथा सांख्यिकीय रूप से महत्त्वहीन संबंध पाया गया। यह अध्ययन संकेत करता है कि शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए अभिप्रेरणा के साथ अन्य व्यक्तिगत एवं शैक्षिक कारकों पर भी विचार करना आवश्यक है। सैनी एवं गौतम (2024) ने कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन कक्षाओं के संदर्भ में सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्षों के अनुसार, निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा छात्राओं में उपलब्धि अभिप्रेरणा अपेक्षाकृत अधिक पाई गई।

वाइसेनफेल्स एवं सहयोगियों (2023) ने जर्मनी के 11 माध्यमिक विद्यालयों के 974 विद्यार्थियों में शैक्षिक दृढ़ता, गणितीय उपलब्धि तथा शैक्षिक आत्म–प्रभावकारिता के संबंधों का अध्ययन किया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि शैक्षिक दृढ़ता गणितीय उपलब्धि की एक महत्त्वपूर्ण पूर्वानुमानक थी तथा आत्म–प्रभावकारिता इन दोनों के संबंध को समझने में सहायक थी। दातु एवं यांग (2021) ने फिलीपींस के 393 माध्यमिक विद्यार्थियों में शैक्षिक दृढ़ता, अभिप्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के संबंधों का अध्ययन किया। परिणामों में शैक्षिक दृढ़ता एवं उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया। साथ ही, स्वायत्त अभिप्रेरणा ने इन दोनों के संबंध को समझने में मध्यस्थ भूमिका निभाई। क्रिगबाम, बेकर एवं स्पिनाथ (2018) ने बुद्धि तथा अभिप्रेरणा की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में सापेक्ष भूमिका का विश्लेषण किया। इस मेटा–विश्लेषण में 74 अध्ययनों तथा 80,145 प्रतिभागियों के निष्कर्ष सम्मिलित किए गए। बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच औसत सहसंबंध 0.44 तथा अभिप्रेरणा एवं उपलब्धि के बीच 0.27 पाया गया। अध्ययन ने बुद्धि को अपेक्षाकृत मजबूत पूर्वानुमानक माना, साथ ही अभिप्रेरणा के स्वतंत्र योगदान को भी स्पष्ट किया। होनिक एवं ब्रॉडबेंट (2016) ने शैक्षिक आत्म–प्रभावकारिता तथा शैक्षिक प्रदर्शन के संबंध में पूर्ववर्ती अध्ययनों की व्यवस्थित समीक्षा की। निष्कर्षों में दोनों के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया। अध्ययन में प्रयास का नियमन, अधिगम की रणनीतियाँ तथा लक्ष्य–अभिविन्यास को भी विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन से संबंधित महत्त्वपूर्ण कारक माना गया।

शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा

शैक्षिक उपलब्धि से आशय शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के परिणामस्वरूप विद्यार्थी द्वारा अर्जित ज्ञान, कौशल, समझ तथा विषयगत दक्षताओं से है। इसका आकलन लिखित परीक्षाओं, मौखिक परीक्षाओं, परियोजना कार्य, व्यावहारिक गतिविधियों, कक्षा सहभागिता तथा सतत मूल्यांकन के माध्यम से किया जा सकता है। शैक्षिक उपलब्धि को केवल परीक्षा में प्राप्त अंकों तक सीमित करना उचित नहीं है, क्योंकि अंक विद्यार्थी की संपूर्ण सीखने की क्षमता, रचनात्मकता, व्यावहारिक दक्षता तथा समस्या–समाधान की योग्यता का पूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं करते। एक व्यापक दृष्टिकोण में विद्यार्थी की प्रगति, विषय की समझ, ज्ञान के अनुप्रयोग तथा स्वतंत्र रूप से सीखने की क्षमता को भी महत्त्व दिया जाना चाहिए। शैक्षिक उपलब्धि एक बहुआयामी परिणाम है, जो विद्यार्थी की व्यक्तिगत विशेषताओं, मनोवैज्ञानिक दशाओं, शिक्षण की गुणवत्ता, विद्यालयी वातावरण तथा पारिवारिक परिस्थितियों की अंतःक्रिया से प्रभावित हो सकता है।

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले व्यक्तिगत कारक

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के दौरान अर्जित ज्ञान, कौशल, योग्यताओं एवं दक्षताओं के स्तर से है, जिसका आकलन सामान्यतः परीक्षा के प्राप्तांकों, कक्षा–कार्य, परियोजना कार्य तथा अन्य शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से किया जाता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अनेक व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयीय कारकों से प्रभावित होती है। व्यक्तिगत कारक वे कारक हैं, जो विद्यार्थी की शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा मनोवैज्ञानिक विशेषताओं से संबंधित होते हैं। ये कारक विद्यार्थी की सीखने की गति, अध्ययन के प्रति रुचि, एकाग्रता तथा शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं। शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख व्यक्तिगत कारक निम्नलिखित हैं–

- **बुद्धि एवं संज्ञानात्मक क्षमता :** बुद्धि को सीखने, तर्क करने, समस्याओं का समाधान करने तथा नई परिस्थितियों के अनुकूल होने की क्षमता से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण संकल्पना माना जाता है। विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताएँ विषय–वस्तु को समझने, सूचनाओं का विश्लेषण करने, स्मरण रखने तथा पूर्वज्ञान को नई परिस्थितियों में लागू करने में सहायता करती हैं। हालाँकि, शैक्षिक उपलब्धि को केवल बुद्धि के आधार पर नहीं समझा जा सकता। पूर्वज्ञान, सीखने के अवसर, अभिप्रेरणा, शिक्षण की गुणवत्ता और अभ्यास भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए

कम उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को केवल कम बुद्धि वाला मानना वैज्ञानिक एवं शैक्षिक दृष्टि से उचित नहीं है।

- **पूर्वज्ञान एवं सीखने की गति :** विद्यार्थी का पूर्वज्ञान नई विषय–वस्तु को समझने का आधार तैयार करता है। यदि विद्यार्थी की पूर्व अवधारणाएँ स्पष्ट हैं, तो वह नई जानकारी को आसानी से उनसे जोड़ सकता है। इसके विपरीत, आधारभूत अवधारणाओं में कठिनाई होने पर आगे की विषय–वस्तु को समझने में समस्या उत्पन्न हो सकती है। विद्यार्थियों की सीखने की गति में भी भिन्नता होती है। कुछ विद्यार्थी मौखिक व्याख्या से बेहतर सीखते हैं, जबकि अन्य को उदाहरणों, चित्रों, गतिविधियों या अतिरिक्त अभ्यास की आवश्यकता होती है। अतः शिक्षण में विविध विधियों का प्रयोग उपयोगी हो सकता है।
- **अभिरुचि एवं अध्ययन की आदतें :** विद्यार्थी की अभिरुचि उसके अध्ययन के प्रति ध्यान, सहभागिता और प्रयास को प्रभावित कर सकती है। जिस विषय में विद्यार्थी की रुचि होती है, उसमें वह अधिक प्रश्न पूछ सकता है, अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने का प्रयास कर सकता है तथा कठिनाइयों का समाधान खोजने में अधिक समय दे सकता है। नियमित अध्ययन, समय–प्रबंधन, पुनरावृत्ति, नोट्स बनाना, अभ्यास करना और अपनी त्रुटियों की समीक्षा करना प्रभावी अध्ययन की आदतों के उदाहरण हैं। इन आदतों के माध्यम से विद्यार्थी अपने सीखने को व्यवस्थित कर सकता है।
- **व्यक्तिगत लक्ष्य एवं उत्तरदायित्व :** विद्यार्थियों के लक्ष्य उनकी अध्ययन संबंधी प्राथमिकताओं को प्रभावित करते हैं। स्पष्ट एवं यथार्थवादी लक्ष्य विद्यार्थी को अपनी प्रगति समझने तथा आवश्यक प्रयास निर्धारित करने में सहायता प्रदान करते हैं। इसके विपरीत, अत्यधिक कठिन या अस्पष्ट लक्ष्य निराशा उत्पन्न कर सकते हैं। स्वयं के अध्ययन के प्रति उत्तरदायित्व, कार्यों को समय पर पूरा करना तथा अपनी प्रगति की समीक्षा करना भी शैक्षिक विकास में सहायक हो सकता है।

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारक

शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम है। यह केवल उनकी बौद्धिक क्षमता या अध्ययन के समय पर निर्भर नहीं करती, बल्कि विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारकों से भी प्रभावित होती है। मनोवैज्ञानिक कारक विद्यार्थियों की मानसिक प्रक्रियाओं, संवेगों, अभिवृत्तियों, अभिप्रेरणाओं तथा व्यवहार संबंधी विशेषताओं से संबंधित होते हैं। ये कारक विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता, अध्ययन के प्रति रुचि, समस्याओं को समझने की योग्यता तथा शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में

महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख मनोवैज्ञानिक कारक निम्नलिखित हैं–

- **अभिप्रेरणा :** अभिप्रेरणा वह मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के व्यवहार को दिशा प्रदान करती है तथा किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयास करने हेतु प्रेरित करती है। शैक्षिक संदर्भ में अभिप्रेरणा विद्यार्थियों की कक्षा–सहभागिता, अभ्यास, प्रयास और कठिनाइयों का सामना करने की प्रवृत्ति से संबंधित है। आंतरिक अभिप्रेरणा में विद्यार्थी सीखने, जिज्ञासा की संतुष्टि अथवा विषय को समझने के आनंद के लिए अध्ययन करता है। बाह्य अभिप्रेरणा में अंक, पुरस्कार, प्रशंसा अथवा अन्य बाहरी परिणाम महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। दोनों प्रकार की अभिप्रेरणा विभिन्न परिस्थितियों में विद्यार्थी के व्यवहार को प्रभावित कर सकती हैं। अभिप्रेरणा का स्तर केवल विद्यार्थी की स्थायी विशेषता नहीं है। शिक्षण विधियाँ, शिक्षक का व्यवहार, कार्य की कठिनाई, सफलता के अवसर तथा कक्षा का वातावरण भी इसे प्रभावित कर सकते हैं।
- **आत्म–अवधारणा एवं आत्मविश्वास :** आत्म–अवधारणा से आशय स्वयं के संबंध में व्यक्ति की धारणाओं से है। शैक्षिक आत्म–अवधारणा में विद्यार्थी यह समझ बनाता है कि वह किसी विषय में कितना सक्षम है। यदि विद्यार्थी स्वयं को गणित, भाषा या विज्ञान सीखने में सक्षम मानता है, तो वह कठिन प्रश्नों का प्रयास करने और त्रुटियों से सीखने के लिए अधिक तैयार हो सकता है। इसके विपरीत, बार–बार असफलता, नकारात्मक टिप्पणियाँ तथा दूसरों से प्रतिकूल तुलना विद्यार्थी के आत्मविश्वास को कम कर सकती हैं। शिक्षक द्वारा रचनात्मक प्रतिपुष्टि, प्रयास की सराहना और सुधार के अवसर प्रदान करने से सकारात्मक शैक्षिक आत्म–अवधारणा विकसित करने में सहायता मिल सकती है।
- **आत्म–प्रभावकारिता :** आत्म–प्रभावकारिता से आशय किसी विशिष्ट कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने की अपनी क्षमता के प्रति व्यक्ति के विश्वास से है। उदाहरण के लिए, किसी कठिन गणितीय समस्या को हल करने, परीक्षा की तैयारी करने अथवा कक्षा में उत्तर देने की क्षमता के प्रति विद्यार्थी का विश्वास उसकी कार्य–चयन, प्रयास और निरंतरता को प्रभावित कर सकता है। ठंदकनतं के सामाजिक संज्ञानात्मक दृष्टिकोण के अनुसार, व्यक्ति के विश्वास, व्यवहार और पर्यावरण के बीच पारस्परिक संबंध होता है। इस दृष्टिकोण से विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को समझते समय उसके आत्मविश्वास, अनुभवों और सीखने की परिस्थितियों पर भी विचार करना आवश्यक है।

- **भावनात्मक स्थिरता एवं चिंता :** भावनात्मक दशाएँ विद्यार्थी की एकाग्रता, स्मृति, निर्णय लेने तथा परीक्षा में प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती हैं। सामान्य स्तर की चुनौती विद्यार्थी को तैयारी के लिए प्रेरित कर सकती है, जबकि अत्यधिक परीक्षा–चिंता उसके ध्यान एवं प्रदर्शन में बाधा उत्पन्न कर सकती है। कुछ विद्यार्थी परीक्षा से पहले घबराहट, असफलता का भय या नकारात्मक विचार अनुभव करते हैं। ऐसी स्थितियों में व्यवस्थित तैयारी, समय–प्रबंधन, सहायक शिक्षक–व्यवहार और आवश्यकता के अनुसार परामर्श उपयोगी हो सकते हैं।
- **धैर्य, दृढ़ता एवं असफलता से सीखना :** सीखने की प्रक्रिया में गलतियाँ और असफलताएँ स्वाभाविक हैं। विद्यार्थी इन अनुभवों की व्याख्या किस प्रकार करता है, यह उसके आगे के प्रयासों को प्रभावित कर सकता है। यदि वह असफलता को अपनी स्थायी अक्षमता का प्रमाण मानता है, तो प्रयास कम कर सकता है। यदि वह उसे सुधार के अवसर के रूप में देखता है, तो वैकल्पिक रणनीतियाँ अपनाने की संभावना बढ़ सकती है। इसलिए कक्षा में ऐसी संस्कृति विकसित करना उपयोगी है जिसमें त्रुटियों को सीखने की प्रक्रिया का स्वाभाविक हिस्सा माना जाए और विद्यार्थियों को सुधार के अवसर उपलब्ध हों।
- **ध्यान, स्मृति एवं स्व–नियमन :** ध्यान और स्मृति सीखने की प्रक्रिया के महत्त्वपूर्ण घटक हैं। ध्यान के माध्यम से विद्यार्थी आवश्यक सूचनाओं पर केंद्रित होता है, जबकि स्मृति अर्जित ज्ञान को बनाए रखने और आवश्यकता पड़ने पर पुनः प्राप्त करने में सहायता करती है। स्व–नियमन में विद्यार्थी अपने लक्ष्य निर्धारित करता है, अध्ययन की योजना बनाता है, अपनी प्रगति पर निगरानी रखता है और आवश्यकता के अनुसार अपनी रणनीतियों में परिवर्तन करता है। यह प्रक्रिया स्वतंत्र अधिगम तथा शैक्षिक कार्यों को व्यवस्थित करने में सहायक हो सकती है।

व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक कारकों की पारस्परिक अंतःक्रिया

व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक कारक एक–दूसरे से अलग–थलग कार्य नहीं करते। उदाहरण के लिए, किसी विद्यार्थी में विषय को समझने की पर्याप्त क्षमता होने के बावजूद यदि उसमें अभिप्रेरणा की कमी है, तो वह नियमित अभ्यास नहीं कर सकता। दूसरी ओर, उच्च अभिप्रेरणा वाला विद्यार्थी अतिरिक्त प्रयास, अभ्यास तथा उपयुक्त रणनीतियों के माध्यम से अपनी उपलब्धि में सुधार कर सकता है। इसी प्रकार, पूर्वज्ञान की कमी विद्यार्थी में कठिनाई उत्पन्न कर सकती है। यदि कठिनाई के साथ आत्मविश्वास में भी कमी आ जाए, तो विद्यार्थी प्रश्न पूछने या अभ्यास करने से बच सकता है। शिक्षक द्वारा अतिरिक्त उदाहरण, व्यक्तिगत मार्गदर्शन और सकारात्मक प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराने पर उसकी

सीखने की प्रक्रिया में सुधार की संभावना बन सकती है। यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि अभिप्रेरणा अथवा आत्मविश्वास हमेशा उच्च उपलब्धि का सुनिश्चित परिणाम नहीं देते। संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षण की गुणवत्ता, विषय की कठिनाई और विद्यार्थी की अन्य परिस्थितियाँ भी परिणामों को प्रभावित करती हैं। इसलिए शैक्षिक उपलब्धि को बहुकारकीय प्रक्रिया के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध विषय के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो केवल विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता अथवा परीक्षा में प्राप्त अंकों तक सीमित नहीं है, बल्कि विभिन्न व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक कारकों से भी प्रभावित होती है। विद्यार्थी की बुद्धि, अभिप्रेरणा, आत्म–प्रभावकारिता, आत्मविश्वास, स्व–नियमन, अध्ययन–अभ्यास, रुचि, अभिवृत्ति तथा लक्ष्य–निर्धारण उसकी अधिगम प्रक्रिया और शैक्षिक प्रदर्शन को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। व्यक्तिगत कारकों में बुद्धि, पूर्वज्ञान, रुचि, अध्ययन की आदतें तथा समय–प्रबंधन जैसी विशेषताएँ विद्यार्थियों की सीखने की गति, विषय–वस्तु को समझने और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता से संबंधित होती हैं। वहीं, मनोवैज्ञानिक कारकों में उपलब्धि–अभिप्रेरणा, आत्म–प्रभावकारिता, आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता तथा स्व–नियमन विद्यार्थियों के प्रयास, एकाग्रता, निरंतरता और कठिन परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं। जिन विद्यार्थियों में सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, स्पष्ट लक्ष्य तथा अपनी क्षमताओं के प्रति विश्वास होता है, वे सामान्यतः अधिगम प्रक्रिया में अधिक सक्रिय सहभागिता कर सकते हैं। पूर्ववर्ती अध्ययनों से भी संकेत मिलता है कि बुद्धि, अभिप्रेरणा तथा आत्म–प्रभावकारिता जैसे कारकों का शैक्षिक उपलब्धि से संबंध पाया गया है। तथापि, विभिन्न अध्ययनों में इन संबंधों की प्रकृति एवं तीव्रता में भिन्नता दिखाई देती है। इससे स्पष्ट होता है कि किसी एक कारक के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की पूर्ण व्याख्या नहीं की जा सकती। इन कारकों के साथ पारिवारिक परिवेश, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, विद्यालयी वातावरण, शिक्षक का व्यवहार तथा उपलब्ध शैक्षिक संसाधन भी महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बेहतर ढंग से समझने के लिए व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक कारकों का समग्र और समन्वित अध्ययन आवश्यक है। शिक्षकों, अभिभावकों तथा शिक्षाविदों को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं, रुचियों, आवश्यकताओं और मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण–अधिगम की प्रक्रियाओं का नियोजन करना चाहिए। सकारात्मक कक्षा–वातावरण, प्रेरणादायक शिक्षण, नियमित प्रतिपुष्टि, प्रभावी

अध्ययन–रणनीतियों तथा आत्मविश्वास के विकास के माध्यम से विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। इस प्रकार, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार के लिए केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनकी संज्ञानात्मक क्षमताओं, मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं तथा व्यक्तिगत विशेषताओं के विकास पर भी ध्यान देना आवश्यक है। यही दृष्टिकोण विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Bandura, A. (1997). *Self-efficacy: The exercise of control*. W. H. Freeman.
2. Deci, E. L., & Ryan, R. M. (1985). *Intrinsic motivation and self-determination in human behavior*. Plenum Press.
3. Dweck, C. S. (2006). *Mindset: The new psychology of success*. Random House.
4. Eccles, J. S., & Wigfield, A. (2002). Motivational beliefs, values, and goals. *Annual Review of Psychology, 53*, 109–132.
5. Merriam, S. B., & Tisdell, E. J. (2016). *Qualitative research: A guide to design and implementation* (4th ed.). Jossey-Bass.
6. Schunk, D. H., & DiBenedetto, M. K. (2020). Motivation and social cognitive theory. *Contemporary Educational Psychology, 60*, Article 101832.
7. Zimmerman, B. J. (2002). Becoming a self-regulated learner: An overview. *Theory Into Practice, 41*(2), 64–70.
8. Braun, V., & Clarke, V. (2006). Using thematic analysis in psychology. *Qualitative Research in Psychology, 3*(2), 77–101.
9. Chebrolu, S. (2024). Relationship between achievement motivation and academic performance. International Journal of Indian Psychology, 12(1). https://doi.org/10.25215/1201.067
10. Datu, J. A. D., & Yang, W. (2021). Academic buoyancy, academic motivation, and academic achievement among Filipino high school students. Current Psychology, 40(8), 3958–3965. https://doi.org/10.1007/s12144-019-00358-y
11. Honicke, T., & Broadbent, J. (2016). The influence of academic self-efficacy on academic performance: A systematic review. Educational Research Review, 17, 63–84. https://doi.org/10.1016/j.edurev.2015.11.002
12. Kriegbaum, K., Becker, N., & Spinath, B. (2018). The relative importance of intelligence and motivation as predictors of school achievement: A meta-analysis. Educational Research Review, 25, 120–148. https://doi.org/10.1016/j.edurev.2018.10.001

13. Parveen, & Chauhan. (2026). A study of achievement motivation in relation to academic achievement at secondary school level. International Journal of Indian Psychology, 14(3), 25–34. https://doi.org/10.25215/1403.003
14. Saini, & Gautam. (2024). Academic achievement motivation: A comparative study of government and private secondary school students during pandemic online classes. Indian Journal of Educational Technology, 6(2), 40–50.
15. Weißenfels, M., et al. (2023). Linking academic buoyancy and math achievement in secondary school students: Does academic self-efficacy play a role? Current Psychology, 42, 23422–23436. https://doi.org/10.1007/s12144-022-03488-y